अकबर की धार्मिक नीति

Ashish kumar Thakur
B.A.II History (H), paper II
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur
Samastipur.

बाबर ने हुमायूँ को सभी धर्मों की भावना एवं रीति-रिवाजों का सम्मान करने को कहा था।

यही सिद्धान्त शाहजहाँ के काल तक मुगल शहंशाहों द्वारा अपनाया गया जिसका चरम अकबर के समय दिखा। अकबर के शिक्षक अब्दुल लतीफ ने उसे सुलह-ए-कुल अर्थात् सभी के साथ प्रेम भाव रखने का पाठ पढ़ाया था।

बदायूनी के अनुसार प्रारम्भ में अकबर पाँचों वक्त का नमाज पढ़ता था और शुक्रवार को नमाजियों को नेतृत्व करता था।

1573 ई० में अकबर ने फतेहपुर सिकरी में इबादतखाना बनवाया जिसका उद्देश्य प्रारम्भ में इस्लामिक मसलों पर विचार विमर्श करना था। यह सभा प्रत्येक शुक्रवार की रात में होती थी।

एक रात को इस्लामिक गुटों में वाद-विवाद के दौरान युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई तथा इसे देख अकबर अत्यंत क्षुब्ध हुआ और इबादतखाना के द्वार सभी धर्मों के लिए खोल दिया।

इबादतखाना में भाग लेने वाले प्रमुख धार्मिक विद्वान इस प्रकार से थे:-

i) मुल्ला अब्दुल - यह एक सुफी संत थे, जिन्हें अकबर ने 'मकदुम उल-मुल्क' की उपाधि प्रदान किया था।

ii) संत जेवियर :- यह ईसाई संत था, जिसे दानियाल का शिक्षक नियुक्त किया गया था।

iii) मॉनसुरेट :- यह भी ईसाई संत थे और मुराद के शिक्षक थे।

iv) हरिविजय सुरी :- यह जैन संत थे, इसे जगत गुरु की उपाधि मिली।

v) जीनचन्द्र सुरी - जैन संत, अकबर ने इसे भुवन प्रधान की उपाधि दी।

vi) दस्तुर जी मेहरजीराना :- पारसी संत, इसे अकबर ने 200 बीघा जमीन दान में ~~खिलअत~~ दिया था।

सूर्य पूजा और अग्नि पूजा की प्रेरणा अकबर को पारसी धर्म से ही प्राप्त हुआ था।

vii) पुरुषोत्तम और देवी :- ये दोनों हिन्दु धर्म के विद्वान थे। इस धर्म ने अकबर के ऊपर सबसे अधिक सकारात्मक प्रभाव डाले।

झरोखा दर्शन, तुलादान, जैसे प्रथाएँ इन्हीं के प्रभाव से प्रारम्भ की गई थी।

Ashish

Scanned with CamScanner

सिक्ख धर्म :- अकबर ने सिक्खों के चौथे गुरु रामदास को 500 बीघा जमीन दान दिया था, जिसमें एक तालाब भी था
बाद में सिक्खों के 5वें गुरु अर्जुनदेव ने इसी भूमि पर अमृतसर नगर की स्थापना की तथा एक गुरुद्वारा बनवाया।
राजा रंजीत सिंह द्वारा इसे सोने से मढ़ने के बाद यह 'स्वर्ण-मंदिर' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

अकबर के विरोधी संत :-

(i) मुल्ला मोहम्मद याजदी :- यह जौनपुर का रहने वाला शिया संत था, जिसने घोषणा की थी कि अकबर के खिलाफ विद्रोह करना धार्मिक कर्तव्य है।

(ii) बदायूँनी :- मुंतखाब-उल-तवारिख के लेखक थे, और मुगल सैन्य सेवा में था, इसने अकबर के 80 ऐसे कार्यों की सूचि प्रदान की जिन्हें वो गैर-धार्मिक मानता था। इसने हिन्दू धर्म ग्रंथों का फारसी अनुवाद करते समय बार-बार शोक प्रकट किया।

1578 में अकबर ने सिजदा एवं पाबोस प्रथा को मुगल दरबार में पुनः स्थापित किया।
sep 1579 में अकबर ने महजरनामा जारी किया। शेख मुबारक और अबुल फजल द्वारा निर्मित इस दस्तावेज के अनुसार अकबर को लौकिक मामले के साथ-साथ धार्मिक विषयों का भी प्रधान मान लिया गया।
इस अवसर पर अकबर ने सुल्तान-ए-आदिल या इमाम-ए-आदिल की उपाधि धारण की।
इसके पूर्व 22 June 1579 को अकबर ने फैजी द्वारा रचित स्वयं का खुतबा पढ़ा। इस परम्परा की प्रेरणा उसे पैगम्बर तथा उनके प्रथम चार खलिफाओं से प्राप्त हुई थी।

दिन-ए-इलाही :-

1582 ई० में काबुल विजय से लौटने के बाद अकबर ने अपने दरबारियों के समक्ष 'दिन-ए-इलाही' को प्रस्तुत किया।

दिन-ए-इलाही या तौहीद-ए-इलाही कोई नया धर्म ना होकर सभी धर्म की अच्छी बातों का संकलन था। इसका प्रधान पुरोहित अबुल फजल था।
इसमें दीक्षा के लिए रविवार का दिन निर्धारित किया गया था इसमें चार चीजें, सम्पत्ति, प्राण, सम्मान और धर्म का त्याग करना पड़ता था। केवल 18 ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने इन चारों तत्वों का त्याग किया था, जिसमें एकमात्र हिन्दू बीरबल थे।
भगवान दास और मानसिंह ने इसका स्पष्ट विरोध किया था
स्मिथ के अनुसार - दीन-ए-इलाही अकबर की बुद्धिमता नहीं बल्कि उसकी बेवकूफी का प्रमाण है।

Ashish

Scanned with CamScanner